राष्ट्रीय जल सम्मेलन

16 से 18 दिसंबर

झालरिया मठ, उज्जैन

प्रस्तावना

प्राकृतिक रूप से हमारे देश की जलवायु में तेजी से बदलाव हो रहा है। लेकिन, इससे सबसे ज्यादा नुकसान देश की नदियों को है। आबादी और विकास के दबाव के कारण हमारी बारहमासी नदियां मौसमी बन रही हैं। कई छोटी नदियां पहले ही गायब हो चुकी हैं। बाढ़ और सूखे की स्थिति बार–बार पैदा हो रही है क्योंकि नदियां मानसून के दौरान बेकाबू हो जाती हैं और बारिश का मौसम खत्म होने के बाद गायब हो जाती हैं। भारत का 25 फीसदी भाग रेगिस्तान बन रहा है। हो सकता है अगले 15 सालों में अपने गुजारे के लिए जितने पानी की हमें जरुरत है उसका सिर्फ हमें 50 प्रतिशत ही मिले। गंगा दुनिया की उन पांच नदियों में से है, जिनका अस्तित्व भारी खतरे में है। गोदावरी पिछले साल कई जगहों पर सूख गई थी। कावेरी अपना 40 फीसदी जल प्रवाह खो चुकी है। कृष्णा और नर्मदा में पानी लगभग 60 फीसदी कम हो चुका है। अधिकांश बड़ी नदियों पर कुछ राज्य विवाद कर रहे हैं। लेकिन, नदियों के बचाने को लेकर समाज में जागरूकता का अभाव है। जल की हमारी 65 फीसदी जरूरत नदियों से पूरी होती है। 3 में से 2 बड़े शहर पहले से ही रोज पानी की कमी से जूझ रहे हैं। बहुत से शहरी लोगों को एक कैन पानी के लिए सामान्य से दस गुना अधिक खर्च करना पड़ता है। हम सिर्फ पीने या घरेलू इस्तेमाल के लिए जल का उपयोग नहीं करते। 80 फीसदी पानी हमारे भोजन को उगाने के लिए इस्तेमाल होता है। हर व्यक्ति की औसत जल आवश्यकता 11 लाख लीटर सालाना है। बाढ़, सूखा और नदियों के मौसमी होने से देश में फसल बर्बाद होने की घटनाएं बढ़ रही हैं। अगले 25–30 सालों में जलवायु परिवर्तन के कारण बाढ़ और सूखे की स्थिति और बदतर होगी। मानसून के समय नदियों में बाढ़ आएगी। बाकी साल सूखा रहेगा। ये रुझान शुरू हो चुके हैं।

वहीं, 21वीं सदी के लिए सबसे बडा संकट है, जल संकट। हम नदियों को मां या माई कहते हैं, लेकिन उनसे कमाई करने लगे हैं। 111 दिन तक गंगा की अविरलता को बनाए रखने के संघर्ष में देश के प्रख्यात वैज्ञानिक एवं संत प्रो0 जी0डी0 अग्रवाल ने अपनी जान दे दी। प्रशासनिक उपेक्षा और समाज की उदासीनता के कारण उन्होंने अपने आप को बलिदान कर दिया। अब एक युवा साध्वी प्रोफेसर जी डी अग्रवाल के संकल्प को पूरा करने के लिए गंगा की तपस्या कर रही है। ऐसे में जरूरत है देश की नदियों को पुर्नजीवित किया जाए। इसी संकल्प के साथ देश के 101 नदी घाटी के लोग उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर 16, 17 और 18 को जल सम्मेलन में एकत्रित हुए थे। करीब पांच सौ से ज्यादा विषय विशेषज्ञ, नदी व पर्यावरण विशेषज्ञ, पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता व आम लोगों ने नदियां पर छा रहे संकट पर चर्चा की साथ ही अपने अपने इलाकों में नदियों व जल स्रोतों के पुर्नजीवित करने के प्रयासों पर चर्चा की। सामुहिक प्रयास, विचार विमर्श, गहन मंत्रणा और सुझावों के बाद एकत्रित लोगों ने क्षिप्रा नदी को पुर्नजीवित करने की रूपरेखा बनाई। साथ ही अपने अपने क्षेत्रों के जल स्रोतों व नदियों को पुर्नजीवित करने का संकल्प लिया।

भूमिका

21 वीं सदी जल संकट की सदी है। यह हम सभी जानते हैं। जल जीवन के लिए मुख्य प्राकृतिक संसाधन है, जो अन्य वस्तुओं की तरह बनाया नहीं जा सकता। जल का एक मात्र स्रोत वर्षा जल है, जो पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों के लिए प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है। भारत में दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी निवास करती है, लेकिन हमारे पास दुनिया के जल संसाधनों मात्र 4 प्रतिशत है। हमारे यहां प्रतिवर्ष 4,000 बिलियन क्यूबिक मीटर औसत वार्षिक वर्षा होती है। यह पानी का मुख्य स्रोत है। देश में वर्षा क्षेत्र में काफी भिन्नता है। इससे बाढ़ और सूखा दोनों का ही हमें सामना करना पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव के कारण मौसम में तेजी से बदलाव आ रहा है। हालत यह है कि देश के 365 से अधिक जिले सूखे और 200 जिले बाढ़ से प्रभावित हैं। भारत में 34 प्रमुख नदी घाटियां हैं। घरेलू, औद्योगिक और कृषि उपयोग की बढ़ती मांग के कारण अंधिकाश नदी घाटियों पर जल संकट बढ़ा है। बढ़ती आबादी, बढ़ती आर्थिक गतिविधियां, कृषि और पेयजल में बढ़ती मांग के कारण जल संसाधन पर लगातार दबाव बढ़ता जा रहा है। 85 प्रतिशत तक भूजल उपयोग हो रहा है। इसी तरह से खेती में भी भूजल का उपयोग लगातार बढता जा रहा है।

देश के लगभग सभी प्रमुख राज्यों में भूजल का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है। जिससे भूजल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। पिछले कुछ दशकों में भूजल का दोहन भारत में तेजी से बढ़ा है। भारत अब दुनिया में भूजल का सबसे अधिक उपभोगकर्ता है, जो अकेले कुल निकाले गए सभी भूजल का 25 प्रतिशत दोहन करता है। भारत दुनिया के सबसे अधिक जल तनाव (वाटर स्ट्रेच) वाली श्रेणी के देश में पहुचा गया है। भारत में प्रतिव्यक्ति जल उपलब्धता 1950 में 3000 से 4000 घनमीटर थी, आज यह लगभग 1,000 घनमीटर रह गयी है। बढ़ते जल संकट के कारण नदियां सूख रही या फिर अपने न्यूनतम जल प्रवाह में बह रही हैं। नदी घाटी के समाज के ऊपर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अनियोजित विकास सरकारी निष्क्रियता, समाज की उदासीनता लगातार जल संकट को बढ़ा रही है। वर्ष 2013 में देश भर के जल एवं पर्यावरण संरक्षण पर कार्य करने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं विषय–विशेषज्ञ एवं नागर समाज के प्रतिनिधियों ने मिलकर भारत में बढ़ रहे जल संकट को रोकने के लिए देश में व्यापक जल साक्षरता चलाने के लिए जल–जन–जोड़ो अभियान प्रारम्भ किया। अभियान के द्वारा प्रति वर्ष राष्ट्रीय जल सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। कर्नाटक के बीजापुर, बुन्देलखण्ड के खजुराहो में सम्मेलनों का आयोजन किया गया, जहां दसियों हजार से अधिक लोगों ने सहभागिता की। अभियान का उद्देश्य व्यापक जल साक्षरता को बढ़ाना, सरकार और समाज के विभिन्न हितग्राहियों को एक मंच पर लाना है, ताकि वह भारत के साझे भविष्य के लिए, पानीदार बनाये रखने के लिए व्यक्तिगत एवं सामुदायिक प्रयास करें। जल–जन–जोड़ो अभियान में देश भर के दो हजार से अधिक संगठन, संस्थाएं, स्वैच्छिक संस्थाऐं जुड़ी हैं। सबका उद्देश्य भारत में 21वी सदीं में उत्पन्न जल संकट को कम करना है और पानी के सामुदायिकरण के अधिकार की मांग करना है। जल संकट के कारण पानी का कारोबार करने वाली कम्पनियों की दृष्टि अपने व्यापार को बढ़ाने में लगी हुयी है इसे रोकने के लिए हमें अपने गांव को पानीदार बनाना होगा, नदियों के जल प्रवाह को बढ़ाना होगा। परम्परागत जल संरचनाओं को पुर्नजीवित करना होगा। यह कार्य कोई एक व्यक्ति या संगठन नहीं कर सकता, इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को आगे आना होगा।

नदियों पर संकट

सम्मेलन का प्रथम दिवस

16 दिसंबर 2019 को उज्जैन में राष्ट्रीय जल सम्मेलन के पहले दिन सुबह उज्जैन शहर में स्थित प्रसिद्ध क्षीरसागर से झालरिया मठ तक जल यात्रा का आयोजन किया गया। इस आयोजन में देशभर से जुटे कार्यकर्ताओं के द्वारा नदी पुनर्जीवन पर केन्द्रित जल यात्रा निकाली गई। यात्रा के दौरान गायत्री परिवार के सदस्य, एनसीसी व एनएसएस कैडेट सहित करीब 2000 स्कूल छात्र छात्राएं शामिल रहे। जन्होंने शहर में क्षिप्रा नदी के पुर्नजीवन करने के लिए नगरवासियों को जागरूक करने का कार्य किया। यात्रा शहर से होते हुए झालरिया मठ पहुंची जहां रैली के समापन किया गया जिसके बाद राष्ट्रीय जल सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में मध्य प्रदेश के लोक निर्माण विभाग एवं उज्जैन के प्रभारी मंत्री सज्जन सिंह वर्मा उपस्थित रहे। इसके अलावा जल पुरूष राजेंद्र सिंह व जल जन जोड़ों अभियान के राष्ट्रीय संयोजक संजय सिंह एवं पूरे देश से आए जल विशेषज्ञों ने अपनी विशेष सहभागिता कर अपनी–अपनी बात रखी। प्रथम दिवस के दूसरे सत्र में विभिन्न नदी घाटी से आए जल योद्धओं, जल सहेलियों व जल विशेषज्ञों ने अपने–अपने इलाकों के जल स्रोतों व नदियों की स्थिति पर प्रकाश डाला। यहां पर बताया गया कि हर साल गर्मी का मौसम आते–आते भूजल की स्थिति गम्भीर हो जाती है। कभी–कभी तो सर्दियों में भी पानी की स्थिति खराब हो जाती है। पेयजल का प्रमुख स्रोत नदी व तालाब हैं। दिनों–दिन इनका प्राकृतिक स्वरूप को खोता जा रहा है। शहरी इलाकों में लोगों को निजी टैंकर संचालकों से महंगा पानी खरीदना पड़ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों की हालत तो और बदतर है, पहाड़ी इलाकों में भी बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय दूषित पानी पीने को मजबूर हैं। उन्हें तो यह दूषित पानी भी मीलों चल कर लाना पड़ रहा है। नदी नालों में पानी सूख जाने के कारण पालतू पशुओं का प्यास बुझाना बहुत मुश्किल साबित हो जाता है। गम्भीर संकट की वजह से गर्मियों में कई क्षेत्रों में लोगों को हर वर्ष पलायन करने को मजबूर होना पड़ता हैं। प्रथम दिन के आखिरी सत्र में देश विदेश की जल समस्या एवं उनके समाधान कैसे किये गये उन सभी पर केंद्रित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

हम सब ने यह ठाना है, क्षिप्रा को बचाना है।,
हम सब ने यह ठाना है, नदियों को बचाना है।,
प्यासी धरती करे पुकार, पेड़ लगाकर करो उपकार,
आज हम बाढ़, सुखाड़ और बढ़ते हुए तापमान से परेशान है,
कल हम इसका समाधान ढूढेंगे।

उद्घाटन सत्र

राष्ट्रीय जल सम्मेलन का उद्घाटन मध्य प्रदेश के लोकनिर्माण विभाग के मंत्री एवं उज्जैन के प्रभारी मंत्री सज्जन सिंह वर्मा, जल पुरूष राजेन्द्र सिंह, विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 बालकृष्ण शर्मा के द्वारा किया गया।

उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता के रूप मध्य प्रदेश के लोकनिर्माण विभाग के मंत्री एवं उज्जैन के प्रभारी मंत्री सज्जन सिंह वर्मा रहे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि देश की नदियां देवियों के समान है और गंगा तो हम सबकी मां है। लेकिन, हम मां से ही झूठ बोलते आ रहे है। मैं विगत सालों में काफी प्रयास किया कि क्षिप्रा को साफ किया जा सके, लेकिन असफल रहा। हम लोग क्षिप्रा नदी में प्रदूषण की समस्या को दूर नहीं कर पाए। नदी के प्रदूषण के हम सभी दोषी है। मैंने अभी पिछले दिनों माननीय मुख्यमंत्री जी से बात कर अन्य विभागों के बजट में कटौती करके क्षिप्रा एवं अन्य नदियों की सफाई की योजना बनाने का आग्रह किया है। हम क्षिप्रा को अविरल और निर्मल बनाकर रहेगे। उन्होंने कहा कि जल पुरूष के मन में नदियों की दुर्दशा को देखकर जो ज्वाला भभक रही है वो उन्हें आधुनिक भारत का भगीरथ बनाती है। हम सबको उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके चलकर नदी पुर्नजीवन के लिए प्रयास करना चाहिए।

सरकारें जन कल्याण के मुद्दे पर संवेदनहीन हो चुकीं हैं। किसी सही मुद्दे को लेकर अगर आपके प्राण भी चले जाएंगे तो ये याद नहीं करेंगे। प्रोफेसर जी डी अग्रवाल के साथ ऐसा ही हुआ।

मैग्सेसे पुरूस्कार से सम्मा. नित जल पुरूष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि इस देश में नदियों के साथ जो अन्याय हुआ है वह 21वी सदी के लिए सबसे बडा संकट है, आज नदियों को हम माई कहते है लेकिन उनसे कमाई करते है। यह नदियों के साथ एक धोखा है। 111 दिन तक गंगा की अविरलता करते हुए इस देश के प्रख्यात वैज्ञानिक एवं संत प्रो0 जी0डी0 अग्रवाल को प्रशासनिक उपेक्षा और समाज की उदासीनता के कारण अपने को बलिदान करना पडा। इस देश में नेताओ ने जनता के साथ धोखा किया है सबसे ज्यादा धोखा नदियों को दिया है। उन्होने कहा कि देश के 101 नदी घाटी के लोग यहां पर उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर एकत्र हुये है जो अपने–अपने इलाके में नदी पुनर्जीवन के लिए प्रयासरत है इनके द्वारा किये गये प्रयास से उज्जैन नगर के लोग सीख लेगे और क्षिप्रा और आस–पास की नदियों को अविरल और निर्मल बनाने का कार्य शुरू करेगे। इसके लिए में भी हमेशा साथ खडा रहूगा।

हमें निराश नहीं होना चाहिए। हमारा उद्देश्य भारत में 21वी सदी में उत्पन्न जल संकट को कम करना है और पानी के सामुदायिकरण के अधिकार की मांग को व्यापाक लोगों तक पहुंचाना है।

जल जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक संजय सिंह ने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य नदियों पर कार्य करने वाले देश के सभी पर्यावरणविदों को एक मंच पर लाना है। समाज और सरकार के सहयोग से नदिया कैसे अविरल हो सकती है, इसके लिए सामूहिक पहल प्रा. रम्भ करना इस कार्यक्रम का उददेश्य है। क्षिप्रा सहित देश की 101 नदियों को अविरल बनाने के लिए जल जन जोडो अभियान सक्रिय है।

जल बिरादरी के संयोजक,कृष्णा नदी पुनर्जीवन पर कार्य करने वाले सत्यनारायण बुलशेट्टी ने कहा कि नदियों को सरकारे प्रदूषित कर रही है रिवर फ्रंट डेवलेपमेंट के नाम पर अतिक्रमित और प्रदूषित कर रही है। इसकी लडाई उन्होंने अपने राज्य में अमरावती शहर के राज्य राजधानी क्षेत्र के निर्माण पर लडी है। आज नदिया का खनन राजनेताओं की कमाई का जरिया बन कर रह गई है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 बालकृष्ण शर्मा ने की उन्होंने कहा कि नदी की पहचान उसके नाद से होती है नाद का मतलब स्वर है। जो नदी कल–कल आवाज के साथ बहती है वही नदी अविरल और निर्मल होती है। मानव के लालच ने नदियों से यह अवि. रलता एवं निर्मलता छीन ली है। सृष्टि जल के बिना संभव और जीवन भी जल के बिना संभव नहीं है विनाश भी जल के अभाव मे होगा। महाकवि भविभूति ने कहा है कि तीर्थ के जल की अग्नि की हमें शुद्धता नहीं करनी पडती थी परंतु यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज हमें नदी की शद्धता करनी पड रही है। इसके लिए केवल मानव जाति ही उत्तरदायी नहीं है।

परिचर्चा सत्र

भोजनावकाश के बाद दूसरा सत्र परिचर्चा का रहा। इसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागियों ने जल संकट और नदियों की स्थिति पर बातचीत की। इस परिचर्चा में मध्य प्रदेश की क्षिप्रा नदी एवं बछेडी नदी, उत्तर प्रदेश के बरूआ नदी, राजस्थान की नदियों एवं झारखंड में जल समस्या एवं देश की नदियों पर चर्चा की गई।

सम्मेलन में सभी सहभागियों के द्वारा अपने–अपने राज्यों के समूह बनाकर अभी तक किये गये नदी पुर्नजीवन के लिए किये गये कार्य तथा आगे की कार्ययोजना के बारे में बताया गया। क्षिप्रा नदी के बारे में राजीव पहवा के द्वारा विस्तृत प्रस्तुतीकरण रखा गया तथा उनके द्वारा बताया गया कि क्षिप्रा को पुर्नजीवित करने के लिए पिछले 10 वर्षो से कार्य किया जा रहा है। नदी के उदगम पर लगभग 1000 तालाब बनाकर नदी को निरन्तर प्रवाह देने की कोशिश की गई है। लेकिन उदगम में ही कार्य करना पर्याप्त नहीं इसके लिए पूरी क्षिप्रा नदी के किनारे ऐसे ही कार्य करने होगे। सिद्धगोपाल सिंह के द्वारा उत्तर प्रदेश में बहने वाली बरूआ नदी के बारे में बताते हुए कहा कि यह नदी बेतवा नदी से निकल कर जामनी नदी में मिलती है। यह बरूआ नदी करीब 16 किलोमीटर लंबी है। इसमें पूर्व में 12 चैक डैम बने थे, जिन्हें बालू माफियाओं ने तोड़ दिए। बाद में परमार्थ संस्था से जुड़े लोगों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर बालू माफियाओं को काम बंद कराया तथा श्रमदान के माध्यम से चैक डैम बनवाये गये। ऐसे ही मध्य प्रदेश से आये मानवेन्द्र सिंह के द्वारा बछेड़ी नदी को लेकर मानवेंद्र ने अपनी टीम का नेतृत्व किया। उन्होंने बताया कि बछेड़ी नदी छतरपुर के देवपुर से शुरू होकर धसान नदी में टीकमगढ़ में मिलती है। बालू खनन की वजह से नदी सूख गई है। नदी में चैक डेम थे, जो टूट चुके हैं। नए चैक डैम बनवाने का प्रस्ताव है। फिलहाल, बोरी बंध कर पानी रोका गया है। इससे अब खेती भी की जा रही है। पेड़ों को पानी भी मिल रहा है। यह सब परमार्थ संस्था की मदद व प्रेरणा से किया गया है।

राजस्थान की 12 नदियों को पुर्नजीवित करने वाली संस्था तरूण भारत संघ के पारस सिंह ने बताया कि तरूण भारत संघ ने समुदाय की मदद से राजस्थान की 12 नदियों को पुर्नजीवित किया है। 34 सालों से तरूण भारत संघ मैग्सेसे पुरूस्कार से सम्मानित जल पुरूष राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में कार्य कर रहा है। समुदाय की सहभागिता से राजस्थान में करीब 11800 जोहर, चोखर, तालाब व दूसरे जलस्रोतों को पुर्नजीवित किया। पारस बताते हैं कि गांव में जलस्रोतों को पुर्नजीवित करने का काम समुदायिक के सहयोग व उनकी जरूरत के हिसाब से किया गया।

बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रथम दिन के अंत में सेवाधाम आश्रम के बच्चों के द्वारा जल संरक्षण पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया । बच्चों ने सबसे पहले मलखम्भ की अनोखी कला पेश की। बच्चों ने गणेश भगवान व दूसरे कई प्रकार के प्रतिबिंबों को प्रदर्शित कर सभी का मन मोह लिया। बाद में उन्होंने पौधों को बचाने की सीख पर एक नाटक प्रस्तुत किया। इसमें पर्यावरण की रक्षा करने की सीख दी गई थी।

द्वितीय दिवस

राष्ट्रीय जल सम्मेलन के द्वितीय दिन साध्वी पदमावती के आमरण अनशन का जल प्रेमियों ने समर्थन किया। गंगा की अविरलता के लिए हरिद्वार के मातृसदन में आमरण अनशन कर रही साध्वी पद्मावती के समर्थन में 05–06 जनवरी को गंगा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस सम्मेलन में देशभर से गंगा भक्त, नदी प्रेमी में जुटेगे। द्वितीय दिन के दूसरे सत्र में देशभर से जुटे नदी विशेषज्ञों ने क्षिप्रा नदी को अविरल एवं निर्मल बनाने के लिए एक श्वेत पत्र जारी किया। श्वेत पत्र में क्षिप्रा नदी के प्रदूषण को कम करने की योजना व प्रयासों का जिक्र किया गया। इसके लिए क्षिप्रा जल बिरादरी का गठन किया गया, जो क्षिप्रा को पुनर्जीवित करने के काम में लगे सभी लोगों को मिलाकर एक कार्ययोजना तैयार करेगा। यह लोग मिलकर नदी को पुर्नजीवित करने के लिए सामुदायिक स्तर से लेकर प्रशासनिक स्तर तक कार्य करेंगे। मैग्सेसे अवार्ड विजेता जल पुरूष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि कुम्भ व इस तरह के दूसरे धार्मिक आयोजन जो नदियों के किनारे लगते है उसका बहिष्कार करने की मांग सरकार से की। उन्होंने सरकार से कहा कि यदि हम नदियों को साफ नहीं कर सकते है तो हमें कोई हक नहीं है कि हम किसी भी नदी के किनारे किसी कार्यक्रम का आयोजन करे। जब नदियों का पानी न पीने के लायक बचा है ना ही आचमन लायक तो सरकार को चाहिए कि कुम्भ जैसे मेलों का आयोजन बंद कर दे।

समानांतर परिचर्चा सत्र

प्रो0 रमेश ने बताया कि नदियों के पानी को बांध बनाकर रोकने की वजह से वातावरण परिस्थितिकी तंत्र में काफी बदलाव देखने का मिल रहा है। नदियों के सतत् प्रवाह को रोके जाने से उनके अन्दर के जीव जन्तु या तो विलुप्त होते जा रहे है, या नये माहौल के अनुसार अपने आप को ढाल रहे है। इससे नदियों का पूरा परिस्थितिकी तंत्र बिगड रहा है। आन्ध्रप्रदेश की नदियों में खूब पानी है लेकिन यहां प्रदूषण की समस्या सबसे बडी है। पानी ज्यादा होने के बा. वजूद जल प्रदूषित होने से पूरा का पूरा पानी अनुप्रयोगी होता जा रहा है। गोदावरी नदी को लेकर पिछले दिनों किये गये अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकला कि गोदावरी में पाये जाने वाले कुछ खास प्रजातियों की मछलिया व जलीय–जीव जन्तु मर रहे है उनके अस्तित्व पर संकट है। यह मछली पूरी दुनिया में सिर्फ गोदावरी नदी में कुछ खास इलाकों में ही मिलती है। प्रदूषण की वजह से यह मर रही है। जल प्रदूषण जारी रहा तो आने वाले समय में किसी भी नदी का जल पीने लायक नहीं बचेगा।

तेलगांना जल बोर्ड के चेयरमेन (कैबिनेट मंत्री) प्रकाश राव ने तेलगांना राज्य में बिगत कुछ सालों में पानी को लेकर सरकार द्वारा किये गये सार्थक प्रयासो के बारे में विस्तार से बताया। तेलगांना में बीस हजार से ज्यादा किसानों ने खुदखुशी की है इसकी सबसे बडी वजह गोदावरी नदी में प्रदूषण का बढना है। तेलगांना में गोदावरी नदी काफी ऊपर–नीचे की भूमि पर बहती है जिस कारण से पानी का बहाव समान नहीं है, इसके लिए तेलगांना सरकार ने दुनिया के सबसे बडे पम्प को लगाकर पानी के बहाव को सामान्य बनाया है। कालेश्वरम प्रोजेक्ट के तहत पानी के बहाव को सही करने का काम किया गया। यह करीब 80 हजार करोड़ रूपये का है।

डी

गुरूस्वामी ने केरल में नदियों में प्रदूषण एवं अविरलता को लेकर अपने विचार व्यक्त किये उन्होंने बताया कि केरल में पानी की कोई कमी नहीं है, यहां की नदियों में पर्याप्त पानी हैं केरल ही एक ऐसा राज्य है जहां नदियों का जाल है लेकिन यह जल स्त्रोत भी प्रदूषण के शिकार होते जा रहे है। सरकार की तरफ से काफी प्रयास किये जा रहे है, लेकिन सामूहिक पहल को बढाना हमारी जिम्मेदारी हैं इसके लिए सरकार के सामने हम कई ऐसे प्रस्ताव बना रहे है जो सरकार के साथ मिलकर जल प्रदूषण को सही कर सकता है।

इस दौरान ज्यूलॉजिकल डिपार्टमेट ऑफ इण्डिया के एच एस साहूकार ने कहा कि पानी के लिए पहला युद्ध लागास और उतमा शहर के बीच टाइग्रेस नदी के किनारे हुआ था। 1950 तक संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका के 180 से ज्यादा झगडे पानी को लेकर है। इतनी तरक्की के बावजूद भी अभी तक वैज्ञानिक यह पता नहीं लगा पाये है कि हमारा कितना मीठा पानी समुद्र में जाकर बर्बाद हो जाता है। उन्होंने एक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पश्चिमी घाटों की नदियों में बिगत शताब्दियों में आये बदलाव को समझाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मैग्सेसे अवार्ड विजेता जल पुरूष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि हमारे महाराष्ट्र के साथियों ने पिछले दिनों एक अभिनव प्रयोग किया, उन्होंने कुम्भ व इस तरह के दूसरे धार्मिक आयोजन जो नदियों के किनारे लगते है उसका बहिष्कार करने की मांग सरकार से की। उन्होंने सरकार से कहा कि यदि हम नदियों को साफ नहीं कर सकते है तो हमें कोई हक नहीं है कि हम किसी भी नदी के किनारे किसी कार्यक्रम का आयोजन करे। जब नदियों का पानी न पीने के लायक बचा है ना ही आचमन लायक तो सरकार को चाहिए कि कुम्भ जैसे मेलों का आयोजन बंद कर दे। असल में इतिहास इस बात का गवाह है कि कुम्भ जैसे आयोजन भलाई–बुराई और नदियों को साफ रखने प्रति लोगों में जागरूकता लाने के लिए ही किये गये थे, लेकिन आधुनिक भारत में नदियों को मात्र उपयोग की वस्तु बना दिया गया है, जिससे नदिया गंदी होती गयी और सूखती चली गई। जल जन जोड़ो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक संजय सिंह ने कहा कि इस सम्मेलन की सार्थकता तभी सिद्ध है जब क्षिप्रा नदी को अविरल और निर्मल बनाने के लिए हम को सार्थक प्रयास करे, जल पुरूष राजेन्द्र सिंह के निर्देशन में संजय सिंह ने सुझाव दिया कि एक श्वेत पत्र तैयार किया जाये जो क्षिप्रा नदी के ऊपर हो, इस पत्र में क्षिप्रा नदी को अविरल और निर्मल बनाने का पूरा खाका पेश किया जाये। जो आने वाले समय में सरकारों के लिए नजीर बन सके।

इस मौके पर सुधीन्द्र मोहन शर्मा के नेतृत्व में क्षिप्रा नदी पर श्वेत पत्र बनाया गया जिसमें क्षिप्रा नदी को साफ करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयासों एवं गतिविधियों को जिक्र किया गया है। इसमें कहा गया कि क्षिप्रा नदी के प्रदूषण को कम किया जायेगा, इसके लिए क्षिप्रा जल बिरादरी का गठन किया गया जिसमें क्षिप्रा को पुनर्जीवित करने वाले सभी लोगों को सम्मलित किया जायेगा। यह सभी लोग मिलकर नदी को पुर्नजीवित करने के लिए सामुदायिक स्तर से लेकर प्रशासनिक स्तर तक कार्य करेगे। बाद में क्षिप्रा नदी के रामघाट पर देश भर से आये विषय विशेषज्ञ, पर्यावरणविद, जल योद्धा एवं जल सहेलियों ने क्षिप्रा सहित देश की नदियों की अविरलता का संकल्प लिया और तय किया कि पहली बार देश के इतिहास में साध्वी गंगा की अविरलता के लिए आमरण अनशन कर रही है। उसके समर्थन में देशभर के नदी प्रेमी आ गये हैं। इस अवसर पर रमेश शर्मा, दीपक परवतियार, गिरीजेश पाण्डे, हिमांशु सिंह, राजेश पंडित, एस0पी0 सिंह, रवि प्रकाश लंगर, राम कुष्ण शुक्ला, अनिल शर्मा, मेदसी भाई, संतोष श्रीवास्तव, प्रदीप श्रीवास्तव आदि सहित देश भर के 400 पर्यावरणविद, जल सहेली, जल योद्धओं के द्वारा सहभागिता की गयी।

परिचर्चा

द्वितीय सत्र में देश भर से आए नदी घाटी के लोगों ने नदियों पर किए गए काम का प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने बताया कि वाटर हार्वेस्टिंग पद्धति के द्वारा बारिश के पानी को जमीन के अन्दर पहुँचाया जाए तो हालात को काफी बदला जा सकता है। युद्ध स्तर पर नदियों, झीलों और कुँओं व बावड़ियों को पुर्नजीवित करने का काम किए जाने की जरूरत है। लोगों और सरकारों की सोच में बदलाव लाने के लिए जल साक्षरता की आवश्यकता है। अगर समुदाय के लोग यह समझ जाएंगे कि पानी बचाने के लिए नदियों को पुर्नजीवित करने की जरूरत है, जिससे भविष्य में आने वाली पीढ़ी भी हमारे प्रयास को समझ सके। सरकारों का रूख ठेकेदार की तरह है। सरकारें पेड़ों और हरियाली को अवरोध मानती है, यह मान कर चला जाता है कि अगर विकास होगा तो उसकी कीमत वहां की नदियों, तालाबों, झीलों और पहाड़ों को चुकानी होगी। वक्ताओं ने कहा कि सिर्फ तीन पीढ़ियों ने ही इतना कचरा नदियों में फेंका गया है, जितना विगत कई सौ सालों में फेंका नहीं गया था। आज हमें सांस्कृतिक बदलाव के बारे में सोचना होगा। कानून अपना काम करता है, लेकिन सांस्कृतिक बदलाव का असर कानून से भी ज्यादा होता है। मानवीय समाज में जो काम कानून नहीं कर सकता है, वह काम संस्कृति करती है। आदिम समय से हमारे देश में नदियों को पूजने की प्रथा रही है, लेकिन आधुनिक संस्कृति व जीवन शैली ने हमें नदियों से दूर कर दिया है। हालत यह है कि हमारे वह शहर जो नदियों पर जिंदा रहते हैं, वही नदियों को गंदा कर उन्हें मार रहे हैं। नदियों को बचाने के लिए एवं सांस्कृतिक बदलाव की जरूरत है। और यह तभी संभव है, जब हर घर जल साक्षर बने। पानी को लेकर शिक्षित होना बहुत जरूरी है। जल के बारे में हमारी सही समय हमे जल संरक्षण की सीख देगी। हमारे गांव अभी भी काफी कुछ जल संरक्षण के प्रति सचेत हैं, लेकिन अब वहां भी बदलाव देखने का मिल रहा है। गांवों के लोगों में भी स्वार्थ घर कर रहा है। वह अब नदियों को बचाने के बारे में ज्यादा नहीं सोच रहे हैं, जबकि आने वाले कुछ सालों में नदियों के अस्तित्व पर ही हमारा अस्तित्व टिका होगा। अगर हम अभी सचेत नहीं हुए तो आने वाला भविष्य हमसे सवाल करेगा, कि जब नदियों पर संकट था तब हम क्या कर रहे थे ? हमे सोचना होगा कि हमारा भविष्य क्या होगा ?

सांस्कृतिक कार्यक्रम

माधव साइन्स कॉलेज के अध्यक्ष अमजद लाला एवं अर्पन भारद्वाज के निर्देशन में छात्र छात्राओं ने जल संरक्षण पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

तृतीय दिवस

नारी शक्ति का संकल्प

तीसरे दिन के प्रथम सत्र में महिलाओं ने संकल्प लिया कि नदी को अविरल एवं निर्मल बनाये रखने के लिए हम हर तरह के प्रयास करेंगे।

सम्मान समारोह

देश के 101 नदी घाटी से आये 40 नदी एवं पर्यावरण पर प्रेरणादायक कार्य करने वालों को सम्मानित किया गया। जिसमें तेलगंना जल बोर्ड के अध्यक्ष प्रकाश राव, कर्नाटक के पूर्व मंत्री वी0 आर0 पाटिल, वैज्ञानिक एच एस साहूकार, गांधीवादी विचारक रमेश भाई, कर्नाटक के बीजापुर से अप्पा साहब, केरल के पाचीमाडा के बेनूगोपाल, गंगा जल बिरादरी के मेजर हिमांशु, बुन्देलखण्ड के रामकृष्ण शुक्ला, राजमंदरी से प्रोफेसर रमेश, उडीसा से वितेन्द्री, बिहार से पंकज मालवीय, कृष्णा नदी से सत्यनारायण, दिल्ली से विजय राय, छतरपुर की पुनिया बाई, टीकमगढ की किरन, राजस्थान के रूणामल, कोटा के बृजेश विजयवर्गीय आदि शामिल रहे। इसके अलावा रोटरी क्लब के पदाधिकरियों एवं अन्य सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। इस मौके पर डा. विमल कुमार गर्ग, गोविंद खंडेलवाल, मिथिलेश गर्ग, बी पी वशिष्ठ, प्रमोद जैन, फादर एंटोनी, सरोज अग्रवाल, प्रकाश रघुवंशी, पदमजा रघुवंशी, आशा जौहरी, रवि वांचु, प्रीयम वांचु, नीर्मला शर्मा, किरण यादव, सुरेश शर्मा,धीरेंद्र रैना, प्रफुल्ल यादव, सुनील गुप्ता, जगदीश पांचाल, रवि लंगर, नलिनी लंगर,जल पुरूष राजेंद्र सिंह, प्रकाश राव, संजय सिंह आदि का सम्मान किया गया।

इसके बाद कावेरी नदी के आपसी मतभेद को दूर करने के लिए एक 14 सदस्यीय टीम बनाई गई। इस टीम ने आपसी मंथन के बाद यह निर्णय लिया कि आगामी 17 व 18 जनवरी को एक चिंतन शिविर का आयोजन किया जाएगा, जिसमें कनार्टक व तमिलनाडु के सभी संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेंगे और मतभेद दूर करने के लिए एक अवधारणा पत्र तैयार किया जाएगा, जिसे दोनों प्रदेशों की सरकारों को सौंपा जाएगा। इस चिंतन शिविर की अध्यक्षता बी आर पाटिल करेंगे।

गोदावरी नदी को सदानीर व निर्मल बनाने के लिए उड़ीसा व आंध्र प्रदेश के प्रतिनिधियों की एक टीम बनाई जाएगी, जो एक कार्ययोजना तैयार करेगी। गोदावरी का निर्मल व सदानीरा बनाने का कार्य, नदी के उद्गम स्थल के वनों को बचाने की मुहिम से शुरू होगी। इसके अलावा क्षिप्रा तट, महाकालेश्वर की नगरी में सभी ने साझा संकल्प लिया कि वह नदियों को सदानीरा और निर्मल बनाएंगे। भारत भूमि को सुख, समद्धि, शान्तिमय बनाने के लिए यहां के जल, जंगल, जमीन को बचाकर भारत की नदियों को शुद्ध सदानीरा बनायेगे। नदियों को अधिकार दिलाने हेतु हम सब प्रयासरत होगे। मानव अधिकार को सुरक्षित करने के लिए जल व नदी अधिकार को सुरक्षित करेगे। इस हेतु संगठित होकर सार्थक प्रयास करने की साधना में लगेगे। समापन सत्र के कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जल पुरूष राजेन्द्र सिंह ने कहा कि नदियों को लेकर सरकारों को ज्यादा संवेदनशील होने की जरूरत है। समाज को जागरूक बनाकर हम नदियों को अविरल एवं निर्मल बना सकते है। नदियों को पुर्नजीवित करने के लिए हमें नारी शक्ति को साथ में लाना काफी जरूरी है। नारियों के बिना नदियां अविरल नहीं बह सकती है। हमें नीर–नारी–नदी का सम्मान वापस लाना होगा तभी जाकर भारत की नदियों को प्रवाहयुक्त एवं निर्मल बना सकते है।

सम्मेलन के अन्त में रोटरी क्लब के पूर्व गर्वनर रविप्रकाश लंगर ने कहा कि हम क्षिप्रा की अविरलता एवं निर्मलता को लेकर 05 साल की कार्ययोजना बनाने का काम करेगे। जिसके लिए नदी के किनारे के समाज को जगायेगे। व्यसायिक शिक्षा, कम पानी की खेती को बढावा देगे। शुद्ध जल के प्रवाह के लिए ऐसी वनस्पतियों का रोपण करायेगे जो नदी के पानी में स्वच्छ बनाने में सहायक सिद्ध होगी। नदी घाटी संगठन का निर्माण करेगे। हर तीन माह में क्षिप्रा की कार्ययोजना की समीक्षा के लिए बैठक का आयोजन किया जायेगा। सम्मेलन में राज हूजूर सिंह गौर ने कहा कि क्षिप्रा की अविरलता के नाम पर अब तक हजारों करोड रूपये खर्च हो चुके है लेकिन नदी अविरल नहीं हुयी जिसका मुख्य कारण समाज की भागेदारी का अभाव है। जिस प्रकार से तीन दिन के राष्ट्रीय जल सम्मेलन में उज्जैन नगर एवं क्षिप्रा नदी के उद्गम के समाज के अन्दर ऊर्जा का संचार किया है। वह क्षिप्रा की अविरलता में कार्य रूप में पर्णित होगा। अविरलता के कार्य में अब रोटरी के साथ सैकडों जुडेगे, इन सब संगठनों को जल पुरूष राजेन्द्र सिंह और संजय सिंह के ऊपर भरोसा है कि वह क्षिप्रा की अविरलता एवं निर्मलता के लिए हम सबका सहयोग एवं मार्गदर्शन करेंगे।

राष्ट्रीय जल सम्मेलन में पारित संकल्प

संकल्प पत्र

हम भारत के लोग क्षिप्रा तट, महाकालेश्वर की नगरी में सभी साझा संकल्प लेते है कि भारत भूमि को सुख, समद्धि,शान्तिमय बनाने के लिए यहां के जल, जंगल, जमीन को बचाकर भारत की नदियों को शुद्ध सदानीरा बनायेगे। नदियों को अधिकार दिलाने हेतु हमसब प्रयासरत होगे। मानव अधिकार को सुरक्षित करने के लिए जल व नदी अधिकार को सुरक्षित करना आवश्यक है। इस हेतु संगठित होकर सा. र्थक प्रयास करेगे।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए गांधीवादी चिन्तक रमेश शर्मा ने कहा कि ''अब नदियों पर संकट है सारे देश को इकट्ठा होने की आवश्यकता है''। प्रोफेसर अभिताभ शुक्ल द्वारा जल जन जोडो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक के लिए अभिनंदन पत्र का वाचन किया गया। जिसमें उनके द्वारा किये जा रहे कार्यो का सराहा गया।

समाचारों में राष्ट्रीय जल सम्मेलन

जल जन जोडो अभियान

686, भारत पेट्रोल पम्प के पीछे, शिवाजी नगर, झांसी – 284001
फोन नं0 – 0510–2321051, 2321050
e-mail - jaljanjodoabhiyan@gmail.com